

## पसमसत्ता पर आधारित धर्मों का स्वरूप



अदिति पाण्डेय

शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग  
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

आज वैज्ञानिक प्रगति ने विश्व को एकत्रित करने का कार्य किया है अर्थात् विज्ञान ने विश्व की भौगोलिक राजनीतिक एवं सामाजिक सीमाओं का अतिक्रमण कर सभी को वैश्विक एकता की ओर अग्रसर किया है किन्तु यहाँ यह प्रश्न उठना सहज है कि यदि सभी जगह जब इतना सौहार्द और सामन्जस्य है तो देश जिन साम्प्रदायिक झन्झावातों को झेल रहे हैं आतंकवाद जैसी गम्भीर समस्याओं से जूझ रहे हैं वह क्या है अथवा क्यों है? यही कारण है कि विद्वत् समाज इस विषय को लेकर कतिपय असन्तुष्ट ही रहा है, क्योंकि जिस वैश्विक एकता की हम बात करते हैं वह उसका बाह्य स्वरूप है जो आन्तरिक एकता के बिना सम्भव नहीं है एतदर्थ विचारक विश्व की आन्तरिक एकता की बात सोचने लगे जिसके केन्द्र में आध्यात्मिक चेतना निहित है। अतः धर्म ही एक ऐसा आधार है जो विश्व के एकता सूत्र को आन्तरिक रूप में दृढ़ करने के लिए आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

धृ धारणे धातु से निष्पन्न धर्म शब्द का अर्थ है धारण करना, पालन करना आदि। धर्म शब्द उन व्यापक अर्थों वाले शब्दों में से एक है जिनका कई रूपों में प्रयोग होता है। पूर्व में धर्म का स्वरूप उस विधा के रूप में था जिसमें कोई व्यक्ति संस्कारित और अनुशासित होता था, यथा— यज्ञ, अध्ययन, ज्ञान से युक्त गृहस्थाश्रम, तपश्चर्या से युक्त तापस धर्म या वानप्रस्थाश्रम अथवा ब्रह्मचरित्र या आचार्य के घर में ही जीवन पर्यन्त रहना ब्रह्मचर्याश्रम वस्तुतः ये सभी माध्यम थे व्यक्ति को साधने के। आगे चलकर विभिन्न विद्वानों ने धर्म को परिभाषित किया जैसे वैशेषिक सूत्रकार आचार्य कणाद ने धर्म को परिभाषित किया है—

यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धिः स धर्मः ।<sup>1</sup>

अर्थात् धर्म वही है जिससे परमानन्द की सिद्धि हो। शनैः शनैः यह धर्म परिभाषित होता गया और समयानुसार इसका अर्थ बदलता गया। इसके साथ कुछ एकांगीय परिभाषाओं में भी धर्म को व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया। जैसे महाभारत के अनुशासन पर्व के अनुसार— 'अहिंसा परमो धर्मः' व मनुस्मृति के अनुसार— आचारो परमो धर्मः है ।<sup>2</sup>

इसके अतिरिक्त अन्य धर्मों में भी धर्म के सनातन स्वरूप को ही स्वीकार किया गया है जैसे सिक्ख धर्म में परमात्मा के रूप में धर्म व्याख्यायित है।

### Asa-Ki var, Adi Grauth P/468

``Sahas Tav nain nan hain hai tohi  
Ka-o sahas morat nanan ayk tohee  
Sahas Pad bimal nan ayk pad gandh  
bin Sahas tav gandh iv chalte mohee  
Sabh meh jot jot hao so-ay  
tis ka chanar sadh ma chanan ho-ay."`

यहीं नहीं धर्म के और भी कई विकल्प हैं जिन्हें अन्वेषित करने का प्रयास लोगों ने किया। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने अपनी पुस्तक जीवन की 'आध्यात्मिक' दृष्टि में व्यक्त किया है कि जिन लोगों के मन धार्मिक सन्देशों में व्यक्त से आक्रान्त है वे वर्तमान अनिश्चय और व्यामोह की स्थिति में से निकलने के लिए उनके उपाय निकाल रहे हैं। नेताओं से कोई निश्चित दिशा न मिलने के कारण वे बड़े भद्दे और आश्चर्यजनक मतों का आलम्बन कर रहे हैं। वे थियोसोफी, एन्थ्रोसोफी, क्रिश्चियन साइन्स, न्यू थाट या इसी प्रकार की मानवीय मन की नई कसरतों में ऐसा विकल्प ढूँढ रहे हैं जो धर्म का स्थान ले सकें।' उदाहरण के लिए उन्होंने प्रकृतिवाद नास्तिकवाद, अज्ञेयवाद, सन्देहवाद, मानवीयवाद कलावाद और आप्त प्रमाणवाद आदि मतों की चर्चा की है और अन्त में उन्होंने कहा है कि एक विभिन्न प्रकार के समन्जन के प्रयास

सफलीभूत नहीं हुए हैं। धर्म के नपे-तुले बंधे-बंधाये आकारों के सम्बन्ध में गहरे असन्तोष के बावजूद लोग उसके प्रति अधिकाधिक गम्भीर होते जा रहे हैं। धर्म के बंधे-बंधाये आकार विलीन हो रहे हैं किन्तु उनकी आवश्यकताएँ अभी तक कायम हैं। करोड़ों व्यक्ति, जिनमें न तो धर्म को अपनाने का साहस है और न उसे अस्वीकार करने का। पथ-निर्देश के लिये इधर-उधर मारे-मारे फिर रहे हैं। प्रकृतिवाद, नास्तिकवाद, अज्ञेयवाद, सन्देहवाद, मानवीयवाद और आप्त प्रमाणवाद की दार्शनिक पद्धतियाँ स्पष्ट और सरल हैं किन्तु उनसे यह प्रतीत नहीं होता कि उन्होंने मानवीय आत्मा की नैसर्गिक गहराई को अनुभव किया हो।<sup>3</sup> इसके साथ ही कुछ संकीर्ण विचार-धाराएँ भी धर्म के अन्दर घर बनाये हुई हैं। जिनसे प्रच्छन्न है धर्म का स्वरूप और आकार। कभी-कभी इन संकीर्ण विचार धाराओं को ही धर्म समझा जाने लगता है इस दशा में कहने वाले मिल जाते हैं कि धर्म नियमों का पालन मात्र है। यहीं नहीं समाज-सेवा, राष्ट्र-सेवा, मानव-सेवा आदि कार्य भी धर्म ही समझे जाते हैं और धर्म के नाम पर मिशनरी धर्म सेवा संघ की स्थापना हुई है। क्या धर्म, मन्दिर, मस्जिद और गिरिजाघर है? क्या बलि, पूजा मत-प्रचार धर्म नहीं है? ऐसे भी प्रश्न धर्म के विषय में उठते हैं। उपर्युक्त सभी विचार और वितर्क आज धर्म के सम्बन्ध में ज्वलन्त प्रश्न बनकर खड़े हैं धर्म क्या है? उक्त सभी विचार धर्म के सम्बन्ध में कहाँ तक समीचीन हैं और धर्म का कौन सा अर्थ अभिप्रेत है? इसके लिए आवश्यक है कि हम धर्म के शाब्दिक अर्थ पर विचार कर लें और यह देखें कि किस-किस रूप में धर्म को ग्रहण किया गया है।

धर्म का अंग्रेजी में अर्थ 'रिलीजन' है। हमारी (हिन्दी, संस्कृत) भाषा में 'रिलीजन' का कोई ठीक पर्याय नहीं है। शब्दकोष में अंग्रेजी शब्द 'रिलीजन' के कई अर्थ प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिये किसी जाति, मत, पंथ या सम्प्रदाय रीति अथवा आचार कर्म को रिलीजन के अर्थ में लिया जाता है। नियम, प्रयोग (व्यवहार), रीति-रिवाज, अधिनियम, धार्मिक या नैतिक गुण, पवित्रता, अच्छे कार्य, कर्तव्य, व्यवहार के लिए निर्धारित क्रिया-विधि भी धर्म के श्रेणी में आते हैं।

वृत्तेरपिधर्मः एषः म.स. 1/114

चरित्र के लिए आवश्यक गुण और भक्ति की भी रिलीजन का शाब्दिक अर्थ बताया गया है।<sup>4</sup> इसी धर्म का विस्तार हम हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, यहूदी आदि धर्म रखते हैं। इसमें

सन्देह नहीं कि धर्म के इन अर्थों को विभिन्न रूपों लिया गया है। इसीलिये कोई धर्म को आचार नीति तक सीमित करता है कोई परम्परा या रीति-रिवाज या कर्मकाण्ड निर्धारित क्रिया-विधि तक ही धर्म को मानता है या कुछ लोग व्यक्तिगत जीवन के चरित्र और व्यवहार से सम्बन्धित गुणों को ही मानवतावादी दृष्टिकोण से सर्वोपरि धर्म मानते हैं। स्पष्ट है कि आध्यात्मिक अर्थ में जिसे धर्म कहते हैं उसका इन मान्यताओं से कोई-भी सम्बन्ध नहीं है। आध्यात्मिक अर्थ में धर्म का अर्थ जो ईश्वर-भक्ति से लिया गया है वहीं अभिप्रेत हो सकता है। यदि धर्म रूप लक्ष्य की प्राप्ति के लिये इन सभी अर्थों को साधन रूप अर्थ में लिया जाय तो वह मुख्य परिपथ से हटकर सहायक तत्त्वों को ही अनुपालना होने लगेगी। इस तरह

भटका हुआ व्यक्ति निश्चित रूप से अशुद्ध निर्णय और मान्यताओं पर पहुँच ही जायेगा जिसे स्वामी रामानन्द प्रार्थना न कहकर आन्तर योग कहते हैं—

अन्तस्तल की नीरव नितान्त एकान्त गुहा में आत्मा का, साधक का अपने प्रियतम प्रभु से कृपामयी जगज्जननी। महाशक्ति से माँ से प्रगाढ़ सम्मिलन है आन्तर योग और सत्ता का यही सान्निध्य ही है धर्म।<sup>5</sup>

धर्म के इस स्वरूप को न ग्रहण कर पान से ही हम धर्म के विभिन्न विकल्पों में पड़ते हैं इसी से धर्म का वास्तविक अर्थ आच्छन्न हो गया। किंचित इसी दृष्टिकोण से अरविन्द ने कहा है कि भारतीय धारणा के हिसाब से धर्म केवल शुभ, उचित, सदाचार, न्याय और आचार-नीति ही नहीं है बल्कि अन्य प्राणियों के साथ प्रकृति और ईश्वर के साथ मनुष्यों के जितने भी सम्बन्ध हैं उन सबका सम्पूर्ण नियमन है और यह नियामक तत्त्व ही वह दिव्य धर्म तत्त्व है जो जगत के सब रूपों और कर्मों के द्वारा आन्तः और बाह्य जीवन के विविध आकारों के द्वारा तथा जगत में जितने प्रकार के भी परस्पर सम्बन्ध हैं उनकी व्याख्या के द्वारा अपने आपको सिद्ध करता रहता है।<sup>6</sup>

इस प्रकार देखा जाय तो धर्म व्यष्टि और समष्टि का एवं परम उदाहरण है। जिसमें व्यष्टि रूप परमात्मा अपनी जीवरूप समष्टि में चराचर जगत में विचारण करता है। फिर वह चाहे ईसाई हो या सिक्ख, इस्लाम हो या यहूदी अथवा हिन्दू सभी उसी परमतत्त्व के कृपा पात्र

है। यथा— इस्लाम धर्म के सर्वधर्मसमन्वयकारी उक्तियाँ मिलती हैं<sup>7</sup>— कुरान में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि वह ईश्वर सब चीजों को बनाने वाला है उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है। (4-7-2)

इसी प्रकार बाइबिल में यूहन्ना रचित सुसमाचार में मिलता है कि “सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई। उसमें जीवन था वह जीवन मनुष्यों की ज्योति थी (1:2-4) इसी सर्वधर्म समन्वयकारी दृष्टिकोण का उल्लेख भारतीय धर्मशास्त्रों में सर्वोपरि— गीता का भी है।—

सर्वधर्मानपरित्यज्य मामेकं शरणं ब्रज

या—यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति 18-66

अतः दृष्टव्य है कि उपर्युक्त सभी तथ्य भिन्न-भिन्न धर्मों के एकरूप में एक प्रकार से अभिन्न रूप से समन्वित है। जैसा कि सूफियों में कहा है—

‘फकत तकावत है नाम ही का उदर असल सब एक ही है यारो,

जो अबिसाफी के मौज है, उसी का जलवा हवाब में है।’

उसी तथ्य का समर्थन उपनिषदों में मुक्त कण्ठ से किया गया है—

गवां अनेक वर्णानां क्षीरस्य आस्ति एक वर्णताः

तथैव सर्वधर्माणां तत्त्वस्यऽपि एक वस्तुता ।

### सन्दर्भ—ग्रन्थ सूची

प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास— डॉ. जयशंकर मिश्र

भारतीय दर्शन— डा. एस.एन. दासगुप्त

भारतीय दर्शन की रूपरेखा— डॉ. एच.पी. सिन्हा

Philosophy of life— A Study—

Bani (Hymns) of Guru Nanak & Upanisads & शोध प्रबन्ध

- कुरआन— सार— विनोबा
- कुरआन— शरीफ (हिन्दी अनुवाद)— सरवरे आलम खाँ
- गीता
- महाभारत
- गीता प्रबन्ध— (प्रथम भाग) अरविन्द
- मनुस्मृति
- संस्कृति का दार्शनिक विवेचन— डा. देवराज
- जीवन की आध्यात्मिक दृष्टि— डा. राधाकृष्णन

### संदर्भ सूची

1. आचारलक्षणो धर्मः सन्तश्चारित्रलक्षणः ।  
साधूनां च यथा वृत्तमेतदाचारलक्षणम् ॥ अनुशासनपर्व— 24.9
2. आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च ।  
तस्मादस्मिन्सदा युक्तो नित्यं स्यादात्मवाद्विजः ॥ मनु. 1.106
3. **Radha Krishnan** जीवन की आध्यात्मिक दृष्टि— 78-79~
4. संस्कृति का दार्शनिक विवेचन, प्रकाशन ब्यूरो, उ.प्र. सन् 1957 प्र. 318 और वर्मन शिवराम आप्टे— व स्टूडेन्ट संस्कृत इंग्लिश डिक्शनरी, पृ. 268
5. स्वामी रामानन्द— आध्यात्मिक साधन, खण्ड—2—सन् 1949 पृ. 1 प्रकाशक त्रिलोक चन्द्र विश्नोई बरेली ।
6. अरविन्द, गीता प्रबन्ध—प्रथम भाग— श्री अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी सन् 1954 पृ. 308
7. कुरआन शरीफ— मन्जिल एक— 262 मन्जिल एक— 27, 28, 29